स्पिनोजा का द्रव्य विचार

स्पिनोजा का जन्म होलैंड के एम्सटर्डम नगर में एक धनी परिवार में हुआ था| अपने क्रांतिकारी विचारों के कारण उन्हें धार्मिक अंधविश्वासों से अरुचि सी हो गई| उनके विचारों के कारण यहूदी समाज ने उन्हें बहिष्कृत कर दिया| यहूदी और ईसाई दोनों समाजों की विद्वेष के कारण स्पिनोजा को बहुत कष्ट में जीवन व्यतीत करना पड़ा| किंतु उन्होंने अपना विचार नहीं बदला| स्पिनोजा विलक्षण प्रतिभाशाली थे| वे कई भाषाओं के पंडित थे| गणित और दर्शन में उनकी विशेष रूचि थी| उन्होंने दर्शन के व्यावहारिक पक्ष पर बल दिया और अपने सिद्धांतों को जीवन में उतारा|

स्पिनोजा के दर्शन का आधार अधिकार के कुछ मूल विचार हैं जिनको स्पिनोजा ने सुधारा संवारा बढ़ाया और अपनाया| देकार्त के समान स्पिनोजा भी कट्टर बुद्धि वादी हैं| वह भी इस बात को मानते हैं कि निर्विकल्प अनुभूति के मौलिक नियमों की सहायता से बुद्धि निश्चय आत्मक और सार्वभौमिक ज्ञान प्राप्त करने की क्षमता रखती है, इस ज्ञान का आदर्श चयनित विशेषता रेखागणित है कि ज्ञान का उद्गम इंद्रियां अनुभव में ना होकर बुद्धि के सार्वभौम नियमों में है| दूसरा देकार्त का द्रव्य गुण और पर्याय का विभाजन और उनकी परिभाषाएं स्पिनोजा को मान्य हैं| तीसरा देकार्त का सिद्धांत की जगत यंत्र बंद है उन्हें मान्य है और देकार्त के आगे बढ़कर उन्होंने जीव को भी यंत्र वत मान लिया किंतु देहआत्म संयोग और उनकी क्रिया प्रतिक्रिया का सिद्धांत स्पिनोजा को मान्य नहीं| स्पिनोजा के दर्शन में देकार्त का द्वैतवाद अद्वैतवाद में ईश्वरवाद सर्वेश्वर बाद में और क्रिया प्रतिक्रियावाद समानांतरवाद में परिणत हो जाता है|

द्रव्य के विषय में देकार्त ने दो प्रकार का द्वैत माना था |

- एक तो पर द्रव्य और अपरद्रव्य का द्वैत और दूसरा चेतन द्रव्य और विस्तृत द्रव्य का द्वैत| स्पिनोजा ने पहले द्वैत को असंगत कहकर ठुकरा दिया और दूसरे द्वैत को संशोधित रूप में स्वीकार किया| स्पिनोजा ने संशोधन किया कि इस बात को द्रव्य के स्तर से उतारकर उनके स्तर पर रख दिया अर्थात चेतन द्रव्य और विस्तृत द्रव्य का तात्विक द्वैत स्वीकार न करके केवल चैतन्य गुण और विस्तार का द्वैत स्वीकार किया| स्पिनोजा ने बताया कि जब देकार्त द्रव्य को स्वतंत्र सत्तासीन मानते हैं तब चित्त और अचित को द्रव्य कैसे मान सकते हैं? चित् अचित् दोनों ईश्वर परतंत्र हैं| उनकी अपनी स्वतंत्र सत्ता नहीं है| अतः वे द्रव्य नहीं है| मात्र ईश्वर द्रव्य कहे जाने के पात्र हैं क्योंकि केवल उन्हें की स्वतंत्रता है| स्पिनोजा ने चित्र और चित्र को द्रव्य के पद से उतारकर गुण के पद पर बैठा दिया| स्पिनोजा के अनुसार चित्र और चित्र दोनों ईश्वर के कौन है | चित का अर्थ चैतन्य और अचित का अर्थ विस्तार है| इस प्रकार देकार्त का द्वैतवाद स्पिनोजा में अद्वैतवाद बन गया| देकार्त के ईश्वर सृष्टि के कर्ता और नियंता बनकर सृष्टि के पार अपने दिव्यलोक में विराजते हैं| उनका सृष्टि के साथ कोई साक्षात और अंतर संबंध नहीं| वे सृष्टि के निमित्त कारण ही हैं| स्पिनोजा ने ईश्वर को सृष्टि का निमित्त कारण और उपाय दान कारण दोनों मानकर ईश्वर और सृष्टि का तादात्म्य में संबंध स्थापित किया| ईश्वर सृष्टि के ऊपर दिव्यलोक में नहीं विराजते और न वे साकार हैं| स्पिनोजा ने कहा कि ईश्वर सृष्टि के अणु-अणु में रम रहे हैं| वे अंतर्यामी हैं| सृष्टि उनका शरीर है| सृष्टि ईश्वर के बाहर नहीं भीतर है| जो कुछ है सब ईश्वर स्वरूप है| इस प्रकार देकार्त का ईश्वरवाद स्पिनोजा में सर्वेश्वरवाद बन गया| स्पिनोजा ने देकार्त के देह आत्म क्रिया प्रतिक्रियावाद को असंगत बताकर अपने समानांतर बाद की पुष्टि की| स्पिनोजा ने बताया कि देह और आत्मा स्वतंत्र द्रव्य नहीं है यह ईश्वर के विस्तार और चैतन्य नामक गुण है, जो दो समानांतर धाराओं के रूप में बह रहे हैं| इनका संयोग या क्रिया प्रतिक्रिया मानने की आवश्यकता नहीं| इस प्रकार देकार्त का क्रिया प्रतिक्रियावाद स्पिनोजा में समानांतरवाद में बदल गया|

द्रव्य गुण और पर्याय

द्रव्य गुण और पर्याय- यह तीन स्पिनोजा के दर्शन के आधार स्तंभ हैं| द्रव्य वह है जिसकी स्वतंत्र सत्ता हो और जिसके ज्ञान के लिए किसी अन्य पदार्थ के ज्ञान की अपेक्षा ना हो| गुण द्रव्य के स्वरूप धर्म हैं अर्थात वे धर्म जिनको बुद्धि द्रव्य का स्वरूप समझती है| पर्याय या प्रकार द्रव्य के परिणामी धर्म है| स्पिनोजा ने द्रव्य की परिभाषा करते हुए कहा है द्रव्य वह है जिसकी स्वतंत्र सत्ता हो और जिसके ज्ञान के लिए किसी अन्य पदार्थ के ज्ञान की अपेक्षा ना हो | स्वातंत्र्य द्रव्य का लक्षण है| जो अपने अस्तित्व और ज्ञान के लिए पूर्ण स्वतंत्र हो वही द्रव्य है| द्रव्य के बिना किसी वस्तु का अस्तित्व या ज्ञान नहीं हो सकता क्योंकि सब पदार्थ अपने अस्तित्व और ज्ञान के लिए द्रव्य पर निर्भर हैं| किंतु द्रव्य किसी पर निर्भर नहीं| द्रव्य वह है जो स्वयं किसी पर निर्भर ना हो और जिस पर सब कुछ निर्भर हो| स्पिनोजा के इस परिभाषा से निम्नलिखित बातें स्पष्ट होती हैं-

1• द्रव्य स्वतंत्र है | वह अपनी सत्ता या अपने ज्ञान के लिए किसी पर निर्भर नहीं|

2• द्रव्य निरपेक्ष है| उसे अपनी सत्ता या अपने ज्ञान के लिए किसी की अपेक्षा नहीं|

3• द्रव्य अपरिमित है| परिमित होने का अर्थ है किसी पर आश्रित होना और द्रव्य किसी पर आश्रित नहीं हो सकता|

4• द्रव्य अद्वितीय है| यदि उसके अतिरिक्त अन्य कोई वस्तु हो तो वह अपरिमित बन जाएगा और अपनी सीमा के लिए उस वस्तु पर आश्रित हो जाएगा| जो अद्वितीय है उसी की स्वतंत्र सत्ता हो सकती है| स्पिनोजा के अनुसार द्वैत होते ही स्वातंत्र्य नष्ट हो जाता है| दो बस तुम्हें कभी स्वतंत्र और निरपेक्ष नहीं हो सकती| वे एक दूसरे को परिमित कर देती हैं उनमें कोई ना कोई संबंध स्थापित करना पड़ता है और संबंध होते ही वे परस्पर सापेक्ष और परतंत्र हो जाती हैं|

5• द्रव्य स्वतंत्र और स्वयं ज्योति है क्योंकि वह अपनी सत्ता और ज्ञान के लिए किसी पर आश्रित नहीं है|

6• द्रव्य स्वयंभू है| वह अपना कारण स्वयं है| उसका कोई कारण या जनक नहीं हो सकता| वही सब का कारण है उसका कोई कारण नहीं है| यदि द्रव्य का भी कोई कारण माना जाए तो परतंत्र और सापेक्ष हो जाएगा इस प्रकार अन अवस्था दोष आ जाएगा|

7• द्रव्य पूर्ण है| उसे किसी की कमी नहीं|

8• द्रव्य नित्य है| यदि वह अनित्य हो तो अपूर्ण और विनाशशील हो जाएगा|

9• द्रव्य अंतर्यामी है| द्रव्य ही सृष्टि के अणु - अणु में व्याप्त है| सब कुछ द्रव्य पर आश्रित है| द्रव्य सब में है और सब कुछ द्रव्य में है| द्रव्य से भिन्न कुछ नहीं है|

10• द्रव्य निर्गुण और अनिर्वचनीय है| हमारी वाणी और बुद्धि की पहुंच द्रव्य तक नहीं| बुद्धि द्रव्य की ओर संकेत करती है किंतु उसे पूर्ण रूप में नहीं जान सकती| वह निर्विकल्प अनुभूति का विषय है| गुण बुद्धि के विकल्प हैं| किसी वस्तु का गुण बताना उस वस्तु को उस गुण द्वारा परिमित करना है| किसी वस्तु का निर्वचन करना उसे उस अंश में सीमित करना है| सीमा या परिचित का अर्थ है अन्य गुण का निषेध| जैसे किसी वस्तु को श्वेत कहना उसमें काले पीले लाल आदि गुणों का निश्चित करना है|

इस स्वतंत्र अपरिमित और अद्वितीय द्रव्य को स्पिनोजा ने ईश्वर के नाम से निर्दिष्ट किया है| उनके अनुसार ईश्वर ही एकमात्र द्रव्य है| स्पिनोजा के ईश्वर यहूदी और ईसाई धर्मों की ईश्वर से भिन्न है धर्म के ईश्वर शगुन और पुरुष विशेष या पुरुषोत्तम है| स्पिनोजा के ईश्वर निर्गुण और अद्वितीय हैं| देकार्त ने तीन द्रव्य माने थे| स्पिनोजा ने एकमात्र ईश्वर को ही द्रव्य माना है| स्पिनोजा की ईश्वर सृष्टि में अंतर्यामी हैं| सृष्टि उनकी बाहर नहीं उनके भीतर हैं| वे सृष्टि में हैं और सृष्टि उनमें हैं| सृष्टि उनका शरीर है वह सृष्टि के प्राण हैं ईश्वर द्रव्य है और सृष्टि उनके गुण पर्यायों का समूह है|

ईश्वर सृष्टि का संबंध तादात्म्य संबंध है| ईश्वर कारण हैं और सृष्टि कार्य| स्पिनोजा कारण को विशिष्ट अर्थ में प्रयुक्त करते हैं अंकित अनुसार कारण और कार्य में तादात्म्यसंबंध है| कारण ही कार्य के रूप में प्रतीत होता है| कारण ही एकमात्र सत है कार्य की सत्ता कारण से आती है| ईश्वर सृष्टि के निमित्त कारण और उत्पादन कारण दोनों हैं| स्पिनोजा ने कारण शब्द का प्रयोग अधिष्ठान के अर्थ में किया है साधारण अर्थ में नहीं| ईश्वर सृष्टि के पैसे कारण नहीं है जैसे पिता पुत्र का कारण होता है या कुम्हार घड़े का|

स्पिनोजा के अनुसार सृष्टि का अर्थ है चित् अचित् रूप विश्व| विश्व ईश्वर का ही स्वरूप है| ईश्वर और विश्व एक ही हैं| विश्व की ईश्वर से पृथक कोई सत्ता नहीं है| विश्व ईश्वर के अंतर्गत है| ईश्वर ही विश्व में प्राप्त है| विश्व ईश्वर के अतिरिक्त और कुछ नहीं है| विश्व ईश्वर में सीमित है किंतु ईश्वर विश्व में सीमित नहीं है| ईश्वर विश्व में अंतर्यामी हैं किंतु ईश्वर विश्व के पार भी हैं| अंतर्यामी और पर दोनों हैं| विश्व उनका शरीर है| वह विश्व की आत्मा है| विश्व उनके गुण पर्यायों का समूह है| वे स्वयं द्रव्य हैं और निर्गुण हैं|

जड़ द्रव्य तथा मन को स्पिनोजा ने एकमात्र द्रव्य के गुणों के रूप में स्वीकार किया और उस एकमात्र द्रव्य को ईश्वर नाम दिया| इस प्रकार ईश्वर ही एकमात्र द्रव्य है| उससे भिन्न और स्वतंत्र किसी चीज की सत्ता नहीं है द्रव्य ही सारी वस्तुओं का स्थाई और चिरंतन आधार

है| वस्तुएं क्षणभंगुर हैं, समुद्र की सतह पर उठती हुई लहरों के सामान हैं| उनका द्रव्य अर्थात ईश्वर से अलग और स्वतंत्र कोई अस्तित्व नहीं है| वास्तविक सत्ता एकमात्र ईश्वर की ही है और अन्य सब कुछ उसी की छाया मात्र हैं|